खण्ड-7, अंक-1, वर्ष-2019, मु0प्र0 9-11
D.O.I.: 10.22445/avsp.v7i1.3

शोध पत्र

पुलिस कर्मियों के सेवाकाल में आक्रामकता का तुलनात्मक अध्ययन

दिनेश कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग
पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ सिटी–230002, उ0प्र0, भारत
dineshpbpg13@gmail.com

प्राप्त तिथि–23.07.2019, स्वीकृत तिथि–16.09.2019

सार– प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य पुलिस कर्मियों के सेवाकाल में आक्रामकता का अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु 90 पुलिस कर्मियों के समूह (सिपाही, उपनिरीक्षक तथा पुलिस उपाधीक्षक) का उ0प्र0 के विभिन्न जनपदों से चयन किया गया, जिनमें 30 सिपाही, 30 उपनिरीक्षक तथा 30 पुलिस उपाधीक्षक थे। समूह में सेवा काल 1 वर्ष, 4 वर्ष तथा 8 वर्ष लिया गया। प्रत्येक उपचार में 30 प्रयोज्यों को लिया गया। प्रो0 एस0एन0 राय द्वारा निर्मित आक्रामकता मापनी का प्रयोग प्रत्येक प्रयोज्य पर किया गया।

बीज शब्द– पुलिस कर्मी, सेवाकाल, आक्रामकता, आक्रामकता मापनी

A comparative study of aggression among the Police personnel in the period of service

Dinesh Kumar
Assistant Professor, Department of Psychology
P.B.P.G. College, Pratapgarh City-230002, U.P., India
dineshpbpg13@gmail.com

Abstract- The main motive of this research paper is to study Aggression of Police personnel in the period of service. For the study the group of 90 Police personnel (30 constables, 30 Sub Inspector and 30 Deputy Superintendent of Police) were chosen from various District of Uttar Pradesh and the Period of service was one year, four year's and eight year's. Thirty subjects were taken in each treatment and each subject was treated individually. The aggression scale constants by Professor S.N. Rai was applied on each subjects.

Key words- Police personnel, period of service, aggression, aggression scale

1. **परिचय–** वर्तमान समय में विश्व में आक्रामकता तथा सामाजिक हिंसा का प्रभाव विस्तृत रूप से देखा जा सकता है। कोई भी समाज या देश इस प्रकार की समस्याओं से अछूता नहीं है। अपने ही देश का उदाहरण लें तो मालूम होगा, कि बिहार सामाजिक हिंसा की चपेट में है, तथा पूर्वोत्तर राज्यों में आक्रामकता तथा हिंसा अपने पैर पसार चुकी है। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने आक्रामकता के व्यवहार के सन्दर्भ में अनेक प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया है। आक्रामकता क्या है? क्या आक्रामकता मनुष्य की प्रकृति का एक सहज और अनिवार्य पक्ष हैं? क्या आक्रामकता का व्यवहार मूल प्रवृत्मात्मक है? आदि प्रश्नों का उत्तर समाज मनोवैज्ञानिकों ने बताने का प्रयत्न किया है। इस तथ्य को डोलार्ड तथा अन्य[4] ने उल्लेख करते हुए कहा कि ''आक्रामकता एक प्रतिक्रिया है, जिसका लक्ष्य किसी जीवित प्राणी को चोट पहुँचाना होता है।'' बेरान तथा बायर्न[7] का विचार था कि ''आक्रामकता व्यवहार का वह प्रकार होता है, जिसका लक्ष्य उस जीवित प्राणी को क्षति अथवा चोट पहुँचाना होता है, जो इस व्यवहार का परिहार करने के लिए अभिप्रेरित रहता है।'' मिशेल[2] ने बताया कि ''किसी को क्षति पहुँचाने के लिए प्रेरित व्यवहार को आक्रामकता कहते हैं।'' बस[4] ने कहा कि ''आक्रामकता वह प्रतिक्रिया है जो दूसरे प्राणी के लिए अनिष्ठकार उद्दीपन प्रदान करता है।'' मायर्स[5] का कथन है कि ''आक्रामकता ऐसा शारीरिक या मौखिक व्यवहार है जो किसी को चोट पहँचाने के उद्देश्य से किया जाता है।'' फ्रायड[6] ने आक्रामकता को एक मूलप्रवृत्यात्मक व्यवहार माना है उन्होंने बताया कि आक्रामकता की उर्जा प्रत्येक व्यक्ति में एकत्र होती रहती है। फ्रायड ने दो प्रकार की मूल प्रवृत्ति जीवनमूलप्रवृत्ति तथा मृत्युमूलप्रवृत्ति बताई जीवनमूलप्रवृत्ति रचनात्मक कार्यों को तथा मृत्युमूलप्रवृत्ति आक्रामकता तथा विध्वंस्कारी कार्यों को बढ़ावा देती है।

2. **उद्देश्य–** प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पुलिस कर्मियों के सेवाकाल में आक्रामकता का अध्ययन करना है।

3. **परिकल्पना**– प्रस्तुत शोध पत्र में निम्न परिकल्पनाओं को केन्द्र बिन्दु पर रखा गया है–

1. पुलिस कर्मियों के कैडर (सिपाही, उपनिरीक्षक तथा पुलिस उपाधीक्षक) का आक्रामकता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. पुलिस कर्मियों की सेवाकाल (1 वर्ष, 4 वर्ष तथा 8 वर्ष) का आक्रामकता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
3. पुलिस कर्मियों के सेवाकाल और कैडर के मध्य अन्तक्रिया में आक्रामकता के सम्बंध में सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

4. **अभिकल्प**– वर्तमान अध्ययन में 3X3 द्विकारक अभिकल्प स्वतन्त्र समूह का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रथम परिवर्तय विषय के तीन स्तर सिपाही, उपनिरीक्षक तथा पुलिस उपाधीक्षक और सेवा काल 1 वर्ष, 4 वर्ष तथा 8 वर्ष लिया गया।

5. **प्रतिदर्श**– यह अध्ययन कुल 90 पुलिस कर्मियों पर किया गया, जिसमें 30 सिपाही, 30 उपनिरीक्षक तथा 30 पुलिस उपाधीक्षक लिए गये। इनका सेवा काल 1 वर्ष, 4 वर्ष, 8 वर्ष तथा वर्ष लिया गया।

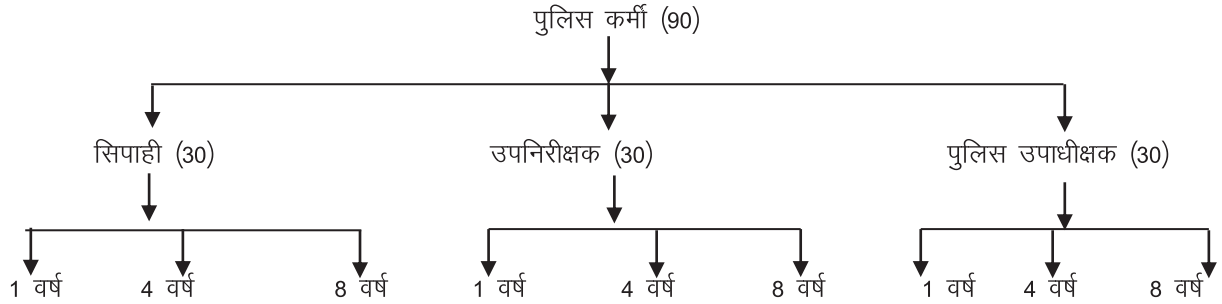

6. **सामग्री**– आक्रामकता को मापने के लिए प्रो0 एस0 एन0 राय[7] द्वारा निर्मित की गई आक्रामकता मापनी का प्रयोग किया गया।

7. **विश्वसनीयता**– आक्रामकता मापनी का विश्वसनीय गुणांक टेस्ट–रि–टेस्ट से 0.80 पाया गया।

8. **वैधता**– आक्रामकता मापनी का वैद्धता गुणांक 0.76 पाया गया।

9. **प्रशासन प्रक्रिया**– सर्वप्रथम हमनें पुलिस कर्मियों से सम्पर्क स्थापित किया फिर उनकी रूचि परीक्षण के लिए उत्पन्न की गयी, उन्हें बताया गया कि हम आपकी आक्रामकता का अध्ययन करना चाहते हैं। इस मापनी में कुल 30 कथन हैं। प्रत्येक कथन पाँच बिन्दु मापनी है जिसमें से आपको केवल एक पर ही सही का निशान लगाना है।

10. **प्राप्तांक**– आक्रामकता मापनी में 30 कथन है। सकारात्मक तथा नकारात्मक दो प्रकार के कथन है। सकारात्मक कथन में सदैव, प्रायः, कभी–कभी, बहुत कम तथा कभी नहीं। इन्हें 5, 4, 3, 2, 1 अंक देना है, तथा नकारात्मक कथनों को सदैव, प्राय 2, कभी–कभी 3, बहुत कम 4, तथा कभी 5 अंक देना है। इन कथनों में से केवल एक पर ही सही का निशान लगाना है। इस प्रक्रिया द्वारा आक्रामकता के स्तर को ज्ञात किया गया।

11. **परिणाम**– इस शोधपत्र का उद्देश्य पुलिस कर्मियों (सिपाही, उपनिरीक्षक तथा पुलिस उपाधीक्षक) के सेवाकाल (1 वर्ष, 4 वर्ष तथा 8 वर्ष) में आक्रामकता का अध्ययन करना था। अध्ययन से प्राप्त संख्यिकीय विश्लेषण में टू–वे एनोवा (3X3) का प्रयोग किया गया प्राप्त परिणाम निम्न **सारिणी–1** में दर्शाया गया है।

सारिणी–1

पुलिस कर्मियों के सेवाकाल के आक्रामकता स्तर का अध्ययन उपरान्त प्राप्त प्राप्तांक

प्रसारण के स्रोत Source of Variance	वर्गों का योग SS	स्वतंत्रता के अंश df	M.S.	F. Ratio
अ. पुलिस कर्मी(between ss)	2460.55	2	1230.27	506.28
ब. सेवाकाल(between ss)	4625.68	2	2312.84	951.78
अ x ब	305.46	4	76.36	31.42
त्रुटि(within ss)	196.80	81	2.43	
योग	7588.49	89		

195(1, 81) पर एफ का मान = 3.96
199(1, 81) पर एफ का मान = 6.96

12. **निष्कर्ष–** प्रस्तुत शोध पत्र में पाया गया कि आक्रामकता के स्तर पर सिपाहियों में सर्वाधिक आक्रामकता पायी गई। उपनिरीक्षकों में कम तथा सबसे कम आक्रामकता पुलिस उपाधीक्षकों में पायी गई। सिपाहियों का आक्रामकता का मध्यमान M = 104.07, उपनिरीक्षकों में आक्रामकता का मध्यमान M = 98.53, तथा पुलिस उपधीक्षकों में आक्रामकता का मध्यमान M = 86.87 पाया गया। सेवा काल में 1 वर्ष का आक्रामकता का मध्यमान M = 101.93, 4 वर्ष का आक्रामकता का मध्यमान M = 98.10 तथा 8 वर्ष सेवाकाल का आक्रमकता का मध्यमान M = 89.43 पाया गया। पुलिस कर्मियों में आक्रामकता पर कैडर का सार्थक प्रभाव पाया गया। इसी तरह आक्रामकता सेवाकाल से भी सार्थक रूप से प्रभावित होती है। कैडर और सेवाकाल के मध्य सार्थक अन्तःक्रिया पायी गई।

संदर्भ

1. डोलार्ड, जे0 डूब; मिलर एल0; माउरर, एन0 ओ0 एच0 एवं सीयर्स, आर0आर0(1939) फ्रेस्टेशन एण्ड एग्रेशन न्यू हेविन, सी0टी0, येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. बेरन, आर0 ए0 एवं बार्यन, डी0 वी0(1987) सोशल साइकोलॉजी, पंचम संस्करण, न्यू देहली प्रेण्टिस हॉल आफ इण्डिया।
3. मिशेल, डब्ल्यू(1981) इण्ट्रोडक्शन टू पर्सनल्टी होल्ट साउण्डर्स।
4. बस, ए0(1971) द साइकोलॉजी ऑफ अग्रेसन, न्यूयार्क : वैली।
5. मायर्स डी0 जी0(1988) सोशल साइकोलॉजी, मेक्ग्रॉ हिल, न्यूयार्क।
6. त्रिपाठी, एल0 बी0(1998) आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, द्वितीय संस्करण, आक्रामकता, मु0पृ0 327–332।
7. राय, एस0 एन0(2006) एग्रेसिवनेस स्केल, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ0प्र0, भारत।